सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-6: बुनकर, लोहा बनाने वाले और फैक्ट्री मालिक

SHIVOM CLASSES 8696608541

भारत के पश्चिम तट पर गुजरात स्थित सूरत हिंद महासागर के रास्ते होने वाले व्यापार के सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाहों में से एक था। उन्नसवीं सदी में ब्रिटेन को दुनिया का सबसे प्रमुख औद्योगिक राष्ट्र बना दिया था। 1850 के दशक में जब ब्रिटेन का लोहा और इस्पात उद्योग भी पनपने लगा तो ब्रिटेन " दुनिया का कारखाना " कहलाने लगा। ब्रिटेन के औद्योगीकरण और भारत पर ब्रिटिश विजय और उपनिवेशीकरण का गहरा संबंध था।

भारतीय कपड़े और विश्व बाज़ार

1750 के आस-पास भारत पुरी दुनिया में कपड़ा उत्पादन के क्षेत्र में औरों से कोसों आगे था। भारतीय कपड़े लंबे समय से अपनी गुणवत्ता और बारीक कारीगरी के लिए दुनिया भर में मशहूर थे।

शब्दों में इतिहास छिपा है

यूरोप के व्यापारियों ने भारत से आया बारीक सूती कपड़ा सबसे पहले मौजूदा ईराक के मोसूल शहर में अरब के व्यापारियों के पास देखा था। इसी आधार पर वे बारीक बनाई वाले सभी कपड़ों को " मस्लिन " (मलमल) कहने लगे।

मसालों की तलाश

जब पहली बार पुर्तगाली भारत आए तो उन्होंने दक्षिण-पश्चिमी भारत मे केरल के तट पर कालीकट में डेरा डाला। यहाँ से वे मसालों के साथ-साथ सूती कपड़ा भी लेते गए।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

ऐसे बहुत सारे शब्द हैं जो पश्चिमी बाजारों में भारतीय कपड़ो की लोकप्रियता की कहानी कहते हैं।

– 1680 के दशक तक इंग्लैंड और यूरोप में छापेदार भारतीय सूती कपड़े की जबरदस्त माँग पैदा हो चुकी थी।

– आकर्षक फूल-पत्तियों, बारीक रेशे और सस्ती कीमत की वजह से भारतीय कपड़े का एक अलग ही रुतबा था।

– इंग्लैंड के रईस ही नहीं बल्कि खुद महारानी भी भारतीय कपड़ो से बने परिधान पहनती थीं।

मसूलीपट्टनम

आंध्र प्रदेश में बारीक कपड़े पर छपाई (छींट) उन्नीसवीं सदी में ईरान और यूरोप को निर्यात होता था।

यूरोपीय बाज़ारो में भारतीय कपड़ा

अठारहवीं सदी की शुरुआत तक आते-आते भारतीय कपड़ो की लोकप्रियता से बेचैन इंग्लैंड के ऊन व रेशम निर्माता भारतीय कपड़ो के आयात का विरोध करने लगे थे।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

कैलिको

1720 में ब्रिटिश सरकार ने इंग्लैंड में छापेदार सूती कपड़े-छींट-के इस्तेमाल पर पाबंदी लगाने के लिए एक कानून पारित कर दिया। संयोगवश, इस कानून को भी कैलिको अधिनियम ही कहा जाता था।

स्पनिंग जैनी

एक ऐसी मशीन जिससे एक कामगार एक साथ कई तकलियों पर काम कर सकता था। जब पहिया घूमता था सारी तकलियाँ घूमने लगती थी। 1764 में जॉन के ने स्पनिंग जैनी का आविष्कार किया जिससे परंपरागत तकलियों की उत्पादकता काफ़ी बढ़ गई।

1786 में रिचर्ड आर्कराइट ने वाष्प इंजन का आविष्कार किया जिसने सूती कपड़े की बुनाई को कांतिकारी रुप से बदल दिया। अब बहुत सारा कपड़ा बेहद कम कीमत पर तैयार किया जा सकता था। इसके बावजूद, दुनिया के बाज़ारो पर भारतीय कपड़े का दबदबा अठारहवीं सदी के आखिर तक बना रहा।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

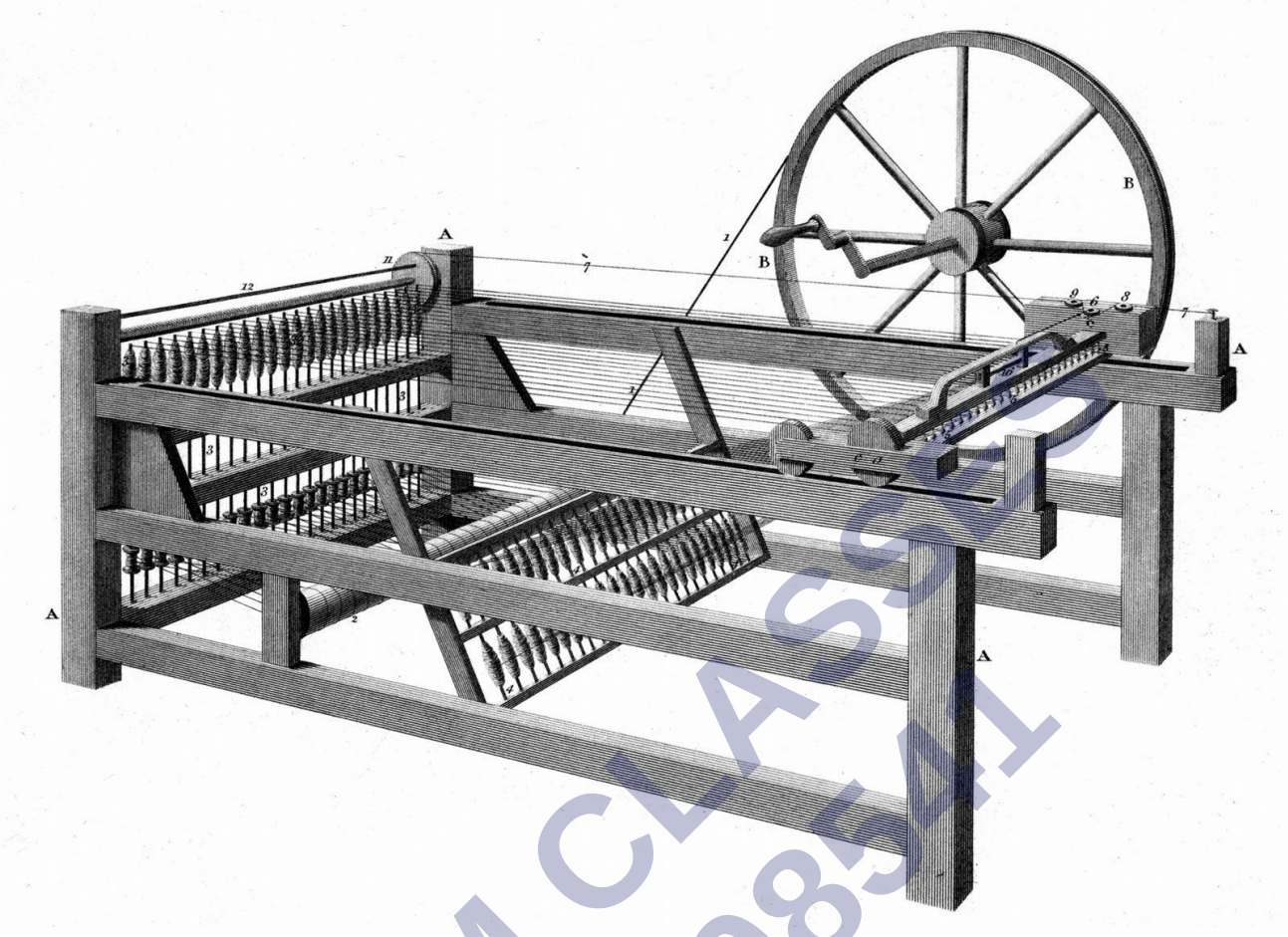

बुनकर

बुनकर आमतौर पर बुनाई का काम करने वाले समुदायों के ही कारीगर होते थे। वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसी हुनर को आगे बढ़ाते। बंगाल के तांती, उत्तर भारत के जुलाहे या मोमिन, दक्षिण भारत के साले व कैलोल्लार तथा देवांग समुदाय बुनकरी के लिए प्रसिद्ध थे। हथकरघों पर होने वाली बुनाई और उससे जुड़े व्यवसायों से लाखों भारतीय की रोजी-रोटी चलती थी।

भारतीय कपड़े का पतन

ब्रिटेन में सूती कपड़ा उद्योग के विकास से भारतीय कपड़ा उत्पादकों पर कई तरह के असर पड़े।

पहला :- अब भारतीय कपड़े को यूरोप और अमरीका के बाजारों में ब्रिटिश उद्योगों में बने कपड़ो से मुकाबला करना पड़ता था।

दूसरा :- भारत से इंग्लैंड को कपड़ो का निर्यात मुश्किल होता जा रहा था क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने भारत से आने वाले कपड़ो पर भारी सीमा शुल्क थोप दिए थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

तीसरा :- उन्नसवीं सदी की शुरुआत तक इंग्लैंड ने भारतीय कपड़ो को अफ्रीका, अमरीका और यूरोप के परंपरागत बाज़ारो से बाहर कर दिया था।

चौथा :- ब्रिटिश और यूरोपीय कम्पनियों ने भारतीय माल खरीदने बंद कर दिए इसकी वजह से हज़ारों बुनकर बेरोजगार हो गए।

सूती कपड़ा मिलों का उदय

भारत में पहली सूती कपड़ा मिल 1854 में बम्बई में स्थापित हुई। यह कताई मिल थी। 1900 तक आते-आते बम्बई में 84 कपड़ा मिलें चालू हो चुकी थी। अहमदाबाद में पहला कारखाना 1861 में खुला। अगले साल ही संयुक्त प्रांत स्थित कानुपर में भी एक कारख़ाना खुल गया।

टीपू सुल्तान की तलवार और वुट्ज स्टील की धार इतनी सख्त और पैनी थी कि वह दुश्मन के लौह-कवच को भी आसानी से चीर सकती थी। इस तलवार में यह गुण कार्बन की अधिक मात्रा वाली वुट्ज नामक स्टील की तलवारें बहुत पैनी और लहरदार होती थीं। इनकी यह बनावट लोहे में गड़े कार्बन के बेहद सूक्ष्म कणों से पैदा होती थी।

भारतीय वुट्ज स्टील ने यूरोपीय वैज्ञानिकों को काफी आकर्षित किया था। विश्वविख्यात वैज्ञानिक और बिजली व विधुत चुम्बकत्व का आविष्कार करने वाले माइकल फैराडे ने भारतीय वुट्ज स्टील की विशेषताओं का चार साल (1818-22) तक अध्ययन किया।

गाँवो की उजड़ी भटिठयाँ

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

वुट्ज स्टील उत्पादन के लिए लोहे के परिशोधन की बेहद परिष्कृत तकनीक जरूरी थी। परंतु भारत मे उन्नीसवीं सदी के अंत तक लोहे का प्रगलन एक सामान्य गतिविधि थी। प्रगालक कारगर थे जो लोहा बनाने के लिए लौह अयस्क के स्थानीय भंडारों का इस्तेमाल करते थे। इसी लोहे से कारखनों में दैनिक इस्तेमाल के औज़ार और साधन बनाए जाते थे। ज्यादातर भटिठयाँ मिट्टी और धूप में सुखायी गई ईंटों से बनी होती थी।

भारत में लोहा व इस्पात कारखानों का उदय

साल 1904 की बात है। अप्रैल के महीने में अमरीकी भूवैज्ञानिक चार्लस वेल्ड और जमशेदजी टाटा के सबसे बड़े बेटे दोराबजी टाटा छत्तीसगढ़ में लौह अयस्क भंडारों की खोजबीन करते घूम रहे थे।

जमशेदजी टाटा भारत में बड़ा भाग खर्च करने को तैयार थे। कुछ सालों बाद सुब्रह्रेखा नदी के तट पर बहुत सारा जंगल साफ करके फैक्ट्री और एक औद्योगिक शहर बसाने के लिए जगह बनाई । इस शहर को जमशेदपुर का नाम दिया गया। यहाँ टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (टिस्को) की स्थापना हुई जिसमें 1912 से स्टील का उत्पादन होने लगा। रेल के पटरियों के लिए भरतीय रेलवे टिस्को पर आश्रित हो गया।
लोहे और इस्पात के मामले में भी औद्योगिक विस्तार शुरू हुआ। जिससे औद्योगिक वस्तुओं की माँग में इज़ाफ़ा हुआ। राष्ट्रीय आंदोलन विकसित हुआ, औद्योगिक वर्ग ताकतवर होता गया।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 79)

प्रश्न 1 यूरोप में किस तरह के कपड़ों की भारी माँग थी ?

उत्तर – यूरोप में भारत के बारीक तथा छापेदार सूती कपड़ों की भारी माँग थी।

प्रश्न 2 जामदानी क्या है ?

उत्तर – जामदानी एक तरह का बारीक मलमल होता है जिस पर करघे में सजावटी चिह्न बुने जाते हैं। इनका रंग प्रायः स्लेटी और सफेद होता है। आमतौर पर सूती और सोने के धागों का इस्तेमाल किया जाता था।

प्रश्न 3 बंडाना क्या है ?

उत्तर – बंडाना छापेदार सूती कपड़ा होता है। बंडाना शब्द का प्रयोग गले या सिर पर बांधने वाले चटक रंग के छापेदार गुलूबंद के लिए किया जाता है। यह शब्द हिंदी के ‘ बांधना ‘ शब्द से निकला है। इस श्रेणी में चटक रंगों वाले ऐसे बहुत से कपड़े आते थे जिसे बांधने और रंगसाजी की विधियों से ही बनाया जाता था। बंडाना शैली के कपड़े मुख्यतः राजस्थान और गुजरात में बनाये जाते थे।

प्रश्न 4 अगरिया कौन होते हैं ?

उत्तर – अगरिया छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गांव में रहने वाले एक समुदाय के लोग थे। वे लौह – अयस्क इकट्ठा करते थे। उन्होंने दोराबजी टाटा को उत्तम लौह-अयस्क के भंडारों की जानकारी दी थी।

प्रश्न 5 रिक्त स्थान भरें :-

1. अंग्रेजी का शिंट्ज़ शब्द हिंदी के ____ शब्द से निकला है।
2. टीपू की तलवार ___ स्टील से बनी थी।
3. भारत का कपड़ा निर्यात ___ सदी में गिरने लगा।

उत्तर –

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

1. अंग्रेजी का शिंट्ज़ शब्द हिंदी के छींट शब्द से निकला है।
2. टीपू की तलवार वुट्ज स्टील से बनी थी।
3. भारत का कपड़ा निर्यात 19वीं सदी में गिरने लगा।

प्रश्न 6 विभिन्न कपड़ों के नामों से उनके इतिहासों के बारे में क्या पता चलता है ?

उत्तर –

(1) यूरोप के व्यापारियों ने भारत से आने वाला बारीक सूती कपड़ा सबसे पहले वर्तमान ईराक के मोसूल शहर में अरब व्यापारियों के पास देखा था। मोसूल के नाम पर वे बारीक बुनाई वाले सभी कपड़ों को " मस्लिन " कहने लगे। शीघ्र ही यह शब्द खूब प्रचलित हो गया।

(2) मसालों की तलाश में भारत में आने वाले पुर्तगालियों ने दक्षिण–पश्चिमी भारत में केरल के तट पर कालीकट में डेरा डाला। यहां से वे मसालों के साथ–साथ सूती कपड़ा भी ले जाते थे। कालीकट से निकले शब्द के आधार पर वे इस कपड़े को " कैलिको " कहने लगे। बाद में हर तरह के सूती कपड़े को कैलिको ही कहा जाने लगा।

(3) छींट शब्द का भी अपना इतिहास है। 1730 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने कलकत्ता स्थित अपने नुमाइंदों के पास कपड़ों का एक आर्डर भेजा था। उनमें छापेदार सूती कपड़े भी शामिल थे। उन्हें ये व्यापारी शिंट्ज़ , कोसा और बंडाना कहते थे। अंग्रेज़ी का शिंट्ज़ शब्द यहां हिंदी के ' छींट ' शब्द से निकला है। 1680 के दशक तक इंग्लैंड और यूरोप में छापेदार भारतीय सूती कपड़े की जबरदस्त मांग थी। आकर्षक फूल – पत्तियों, बारीक रेशे और कम मूल्य के कारण भारतीय कपड़ा ही लोकप्रिय था। इंग्लैंड के धनी लोग ही नहीं बल्कि स्वयं महारानी भी भारतीय कपड़ों से बने परिधान पहनती थी।

(4) बंडाना शब्द का प्रयोग गले या सिर पर पहनने वाले तीखे रंग के छापेदार गुलूबंद के लिए किया जाता है। इस श्रेणी में ऐसे बहुत से कपड़े आते थे जिन्हें बांधने और रंगसाजी की विधियों से ही बनाया जाता था। आर्डर में कुछ अन्य कपड़ों का भी उल्लेख है जिनका नाम उनके जन्म स्थान के अनुसार लिखा गया था। कासिमबाज़ार, पटना, कलकत्ता, उड़ीसा, चारपूर आदि। इन शब्दों के व्यापक प्रयोग से पता चलता है कि संसार विभिन्न भागों में भारतीय कपड़े कितने लोकप्रिय थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

प्रश्न 7 इंग्लैंड के ऊन और रेशम उत्पादकों ने अठारहवीं सदी की शुरुआत में भारत से आयात होने वाले कपड़े का विरोध क्यों किया था ?

उत्तर – विरोध होने के निम्नलिखित कारण है :-

- अठारहवीं सदी में भारतीय कपड़ों की काफी लोकप्रियता बढ़ गई थी। जो अंग्रेजों को पसंद नहीं आया।
- भारतीय कपड़े की इंग्लैंड में होड़ मची हुई थी। यहां तक कि इंग्लैंड की महारानी भी भारतीय कपड़ा पहनना ही पसंद करती थी।
- उस समय इंग्लैंड में नए कपड़ा कारखाने खुल रहे थे। भारत में ऊन तथा रेशम उत्पादक देखते हुए। अंग्रेज इंग्लैंड भी ऊन तथा रेशम उत्पादक बढ़ाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने भारतीय कपड़ों का विरोध करना शुरू कर दिया।
- अंग्रेज चाहते थे कि उनके देश में खाली हमारा पकड़ा ही लोग खरीदें।
- अंग्रेजों ने भारतीय कपड़ों का विरोध शुरू कर दिया और आयात पर रोक लगाने की मांग भी कर डाली।

प्रश्न 8 ब्रिटेन में कपास उद्योग के विकास से भारत के कपड़ा उत्पादकों पर किस तरह के प्रभाव पड़े ?

उत्तर – भारतीय कपड़े को यूरोप तथा अमरीका के बाजारों में ब्रिटिश कारखानों में बने कपड़े से मुकाबला करना पड़ता था। भारत से इंग्लैंड को कपड़े का निर्यात कठिन होता जा रहा था क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने भारत से आने वाले कपड़े पर भारी सीमा शुल्क लगा दिए थे। इंग्लैंड में बने सूती कपड़े ने उन्नीसवीं सदी की शुरुआत तक भारतीय बिक्री से पहले चीज़ों को जमा कपड़े को अफ्रीका, अमरीका और यूरोप के परंपरागत बाज़ारों से बाहर कर करके रखा जाता है। वर्कशॉप दिया था। इसकी वजह से हमारे यहाँ के हज़ारों बुनकर बेरोज़गार हो गए। के लिए भी यह शब्द इस्तेमाल सबसे बुरी मार बंगाल के बुनकरों पर पड़ी।

प्रश्न 9 उन्नीसवीं सदी में भारतीय लौह प्रगलन उद्योग का पतन क्यों हुआ ?

उत्तर – पतन होने के निम्नलिखित कारण थे :-

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- ब्रिटिश सरकार नया कानून लेकर आई थी जिसके कारण आरक्षित वनों लोगों के प्रवेश पर पाबंदी लगा दी।
- पाबंदी लगने से कारीगरों को लड़की मिलनी काफी कठिन हो गया था।
- पाबंदी के कारण लौह – अयस्क (कॉपर) के स्रोत भी बंद हो गए
- आजीविका के लिए धीरे धीरे लोग अपना काम बदलने लगे।

इसी कारण धीरे धीरे भारतीय लौह प्रगलन उद्योग का पतन हो गया।

प्रश्न 10 भारतीय वस्त्रोद्योग को अपने शुरुआती सालों में किन समस्याओं से जूझना पड़ा ?

उत्तर – भारतीय वस्त्र उद्योग को शुरुआती सालों में कई प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ा। सबसे बड़ी समस्या तो यह थी कि इस उद्योग को ब्रिटेन से आए सस्ते कपड़ों का मुकाबला करना पड़ता था। अधिकतर देशों में सरकारें आयात होने हाली वस्तुओं पर सीमा शुल्क लगा कर अपने देश में औद्योगीकरण को बढ़ावा देती थीं। इससे प्रतिस्पर्धा समाप्त हो जाती थी और संबंधित देश के नए उद्योगों को संरक्षण मिलता था। परंतु भारत की अंग्रेज़ी सरकार ने भारत में नवस्थापित वस्त्र उद्योग को इस तरह की सुरक्षा प्रदान नहीं की। परिणामस्वरूप भारत में वस्त्र उद्योग के विकास की गति मंद रही।

प्रश्न 11 पहले महायुद्ध के दौरान अपना स्टील उत्पादन बढ़ाने में टिस्को को किस बात से मदद मिली ?

उत्तर –

(1) टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (टिस्को) की स्थापना हुई जिसमें 1912 में स्टील का उत्पादन होने लगा। टिस्को की स्थापना बहुत सही समय पर हुई थी, क्योंकि उन्नीसवीं सदी में भारत आमतौर पर ब्रिटेन में बने स्टील का आयात कर रहा था।

(2) भारत में रेलवे के विस्तार की वजह से ब्रिटेन में बनी पटरियों की यहाँ भारी माँग थी। काफी समय तक भारतीय रेलवे से जुड़े अंग्रेज विशेषज्ञ यह मानने को तैयार ही नहीं थे कि भारत में भी श्रेष्ठ इस्पात का निर्माण संभव है। जब तक टिस्को की स्थापना हुई, हालात बदलने लगे थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

(3) 1914 में पहला विश्व युद्ध शुरू हुआ। ब्रिटेन में बनने वाले इस्पात को यूरोप में युद्ध संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए झोंक दिया गया। इस तरह भारत आने वाले ब्रिटिश स्टील की मात्रा में भारी गिरावट आई और रेल की पटरियों के लिए भारतीय रेलवे टिस्को पर आश्रित हो गया।

(4) जब युद्ध लंबा खिंच गया तो टिस्को को युद्ध के लिए गोलों के खोल और रेलगाड़ियों के पहिये बनाने का काम भी सौंप दिया गया। 1919 तक स्थिति यह हो गई थी कि टिस्को में बनने वाले 90 प्रतिशत इस्पात को औपनिवेशिक सरकार ही खरीद लेती थी। जैसे – जैसे समय बीता टिस्को समस्त ब्रिटिश साम्राज्य में इस्पात का सबसे बड़ा कारखाना बन चुका था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)